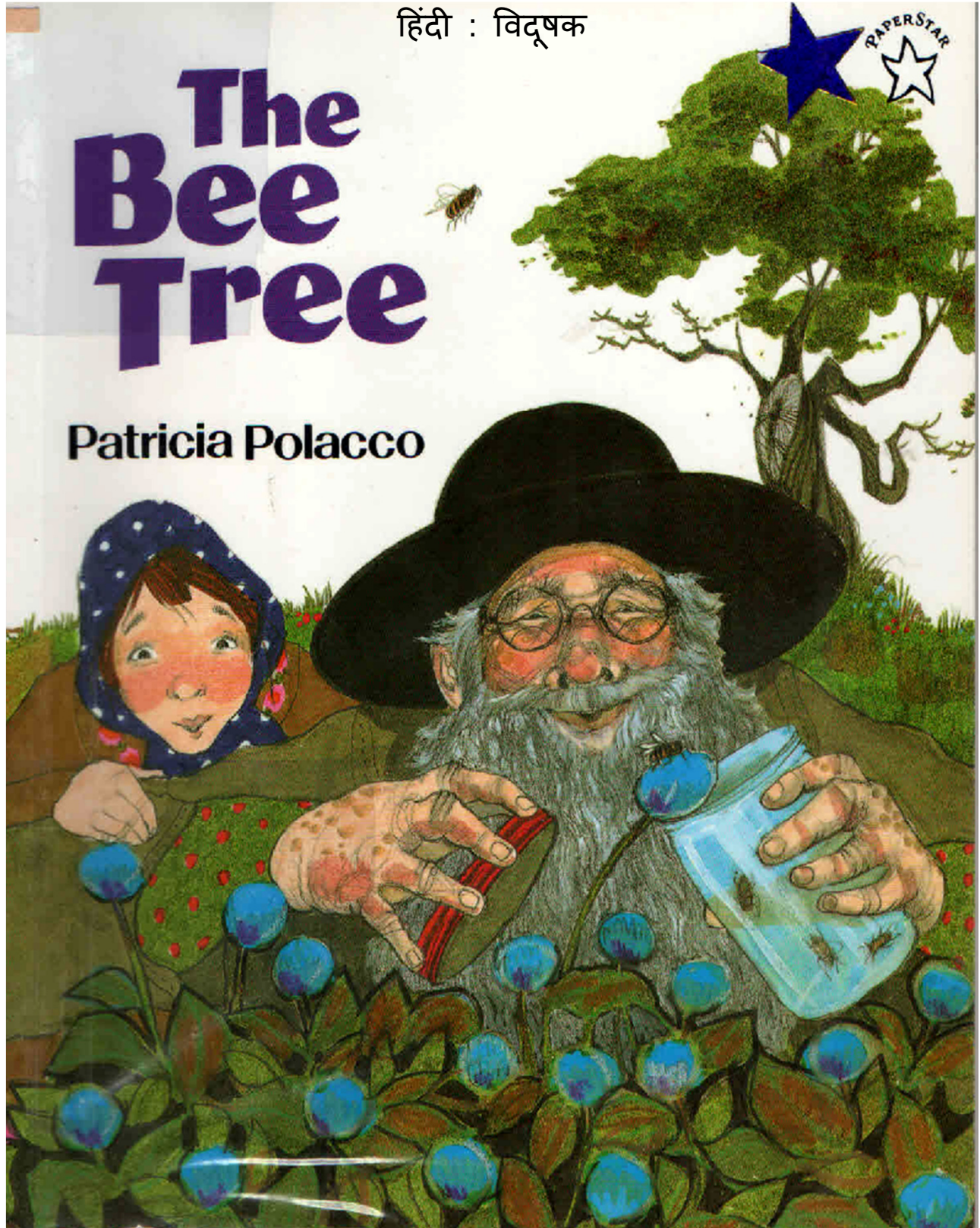


मधुमक्खी का पेड़

पैटरिशिया पोलाक्को

हिंदी : विदूषक



मधुमक्खी का पेड़

पैटरिशिया पोलाक्को

हिंदी : विदूषक

The Bee Tree

Patricia Polacco







“में किताबें पढ़ते-पढ़ते थक गई हूँ, दादाजी,” मैरी एलेन ने दुखी होते हुए कहा.
“मेरा इस समय बाहर जाकर दौड़ने और खेलने का मन कर रहा है.”

“यानि तुम्हारा अभी पढ़ने का मन नहीं है? तुम्हारा दौड़ने का दिल हो रहा है.
मुझे लगता है मधुमक्खी का पेड़ खोजने का, यह सही समय है!” दादाजी ने कहा.
फिर उन्होंने हाथ में एक कांच की बोतल ली और अपनी लकी हैट पहनी.

“दादाजी, मधुमक्खी का पेड़ क्या होता है?” मैरी एलेन ने पूछा.

“वही पेड़ जहाँ मधुमक्खियाँ अपना घर बनाती हैं और जहाँ वो शहद छिपा कर
रखती हैं. वो शहद सबसे मीठा होता है!” दादाजी ने उत्साह से भरे शब्दों में कहा.

“पर हमारे घर में तो अभी काफी शहद है, दादाजी,” मैरी एलेन ने कहा.

“नहीं, वैसा शहद नहीं है,” दादाजी ने आँख मारते हुए उत्तर दिया.

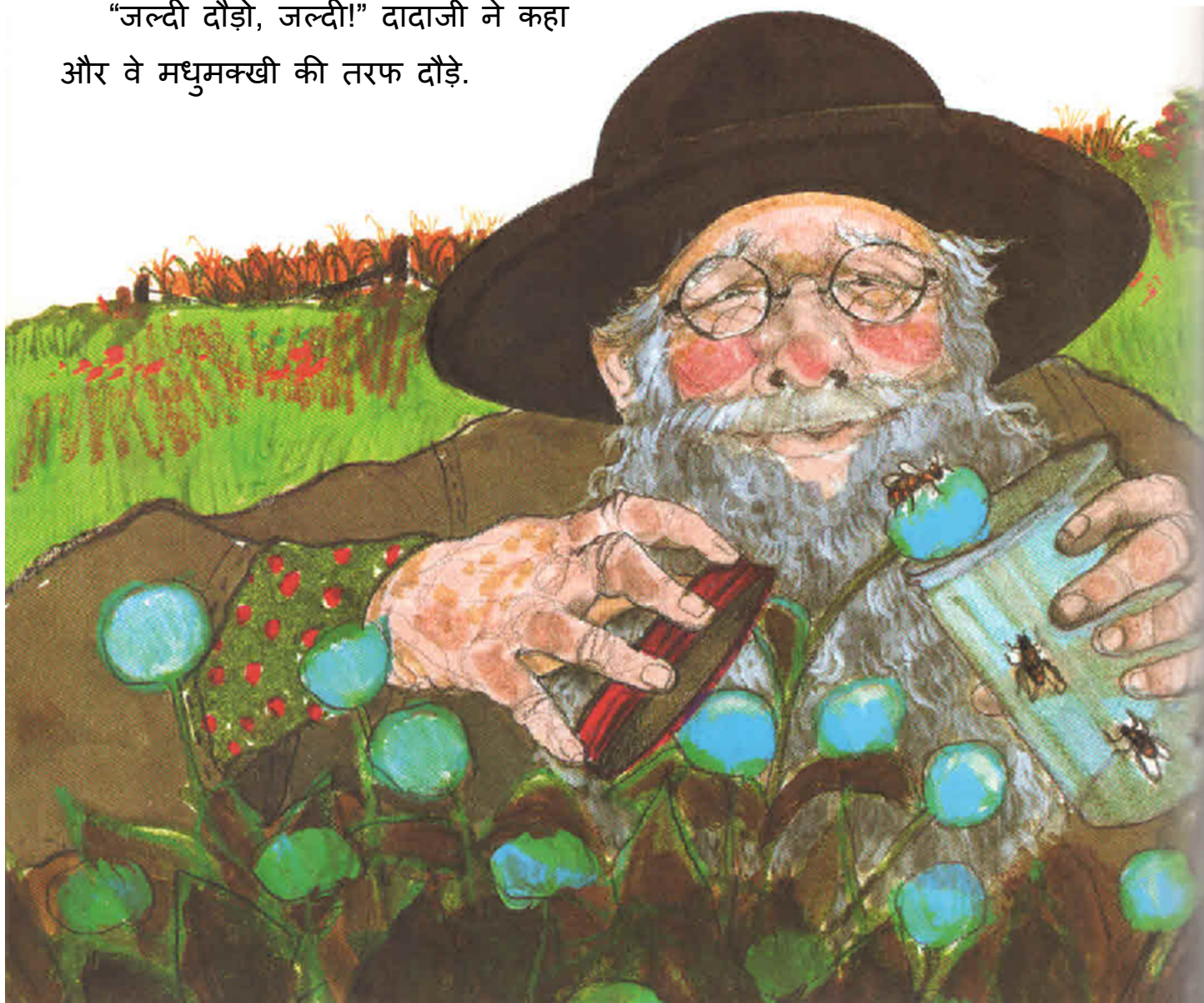


मैरी एलेन और दादाजी ने फिर अपने-अपने कोट पहने और वो बाहर निकले. बाहर बगीचे में गेंदों के फूलों पर तमाम मधुमक्खियाँ मंडरा रही थीं - फूल-फूल पर जाकर पराग चुन रही थीं. दादाजी ने कुछ मधुमक्खियों को कांच की बोतल में पकड़ा. उन्होंने सावधानी बरती जिससे मधुमक्खियों को कोई चोट न लगे.

कुछ मधुमक्खियाँ इकट्ठी करने के बाद वो मुस्कुराये और मैरी एलेन के पास आए. "यह मधुमक्खियाँ, फूलों के पराग को, शहद बनाने के लिए सीधे अपने छत्ते में लेकर जायेंगी, और हम उनके बिल्कुल पीछे-पीछे होंगे!"

फिर दादाजी ने हल्के से बोतल का थोड़ा सा ढक्कन खोला जिससे एक मधुमक्खी बाहर निकली. वो एक क्षण के लिए ढक्कन पर बैठी और फिर वो सीधी उड़ी मक्का के खेत की ओर.

"जल्दी दौड़ो, जल्दी!" दादाजी ने कहा और वे मधुमक्खी की तरफ दौड़े.







तभी नाले के उस पार, मिसेस गोवर्लॉक अपने छोटे बेटे सिल्वेस्टर को बच्चा-गाड़ी में घुमाने लेकर जा रही थीं.

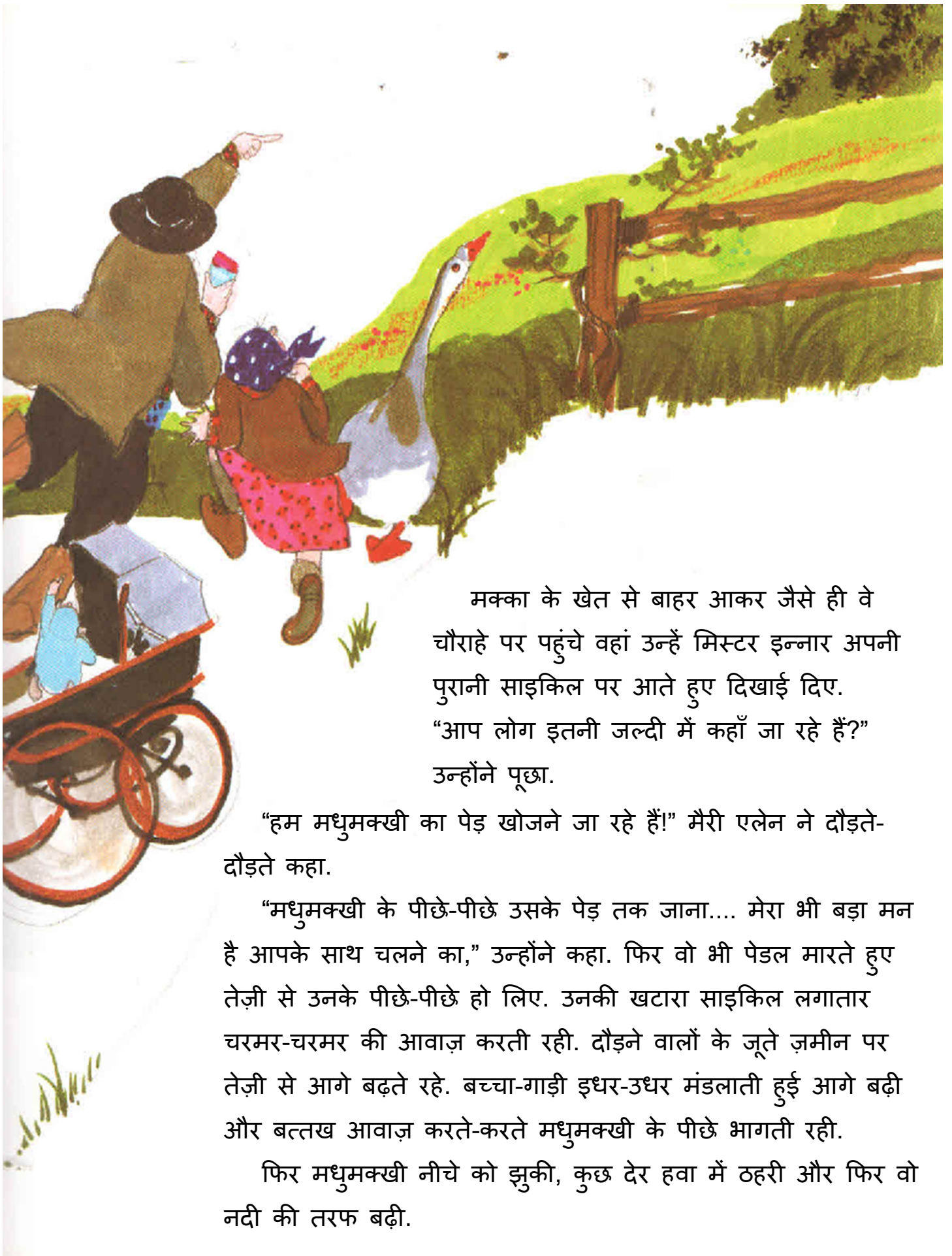
“हम आज मधुमक्खी का पेड़ खोजने जा रहे हैं!” दादाजी चिल्लाए.

“बचपन के बाद से मैंने यह खोज दुबारा कभी नहीं की!” मिसेस गोवर्लॉक ने बहुत उत्साहित होते हुए कहा. “क्या मैं आपके साथ आ सकती हूँ?”

दादाजी ने उन्हें साथ आने का इशारा किया. फिर वे तीनों मधुमक्खी के पीछे-पीछे दौड़े. मक्के के पौधों के बीच, जब बच्चा-गाड़ी ने ऊपर-नीचे हिचकोले खाए तो बेबी सिल्वेस्टर खुशी से किलकारी मार कर हंसने लगा. उनके पीछे-पीछे एक बत्तख भी चल पड़ी.







मक्का के खेत से बाहर आकर जैसे ही वे चौराहे पर पहुंचे वहां उन्हें मिस्टर इन्नार अपनी पुरानी साइकिल पर आते हुए दिखाई दिए.
“आप लोग इतनी जल्दी में कहाँ जा रहे हैं?”
उन्होंने पूछा.

“हम मधुमक्खी का पेड़ खोजने जा रहे हैं!” मैरी एलेन ने दौड़ते-दौड़ते कहा.

“मधुमक्खी के पीछे-पीछे उसके पेड़ तक जाना.... मेरा भी बड़ा मन है आपके साथ चलने का,” उन्होंने कहा. फिर वो भी पेडल मारते हुए तेज़ी से उनके पीछे-पीछे हो लिए. उनकी खटारा साइकिल लगातार चरमर-चरमर की आवाज़ करती रही. दौड़ने वालों के जूते ज़मीन पर तेज़ी से आगे बढ़ते रहे. बच्चा-गाड़ी इधर-उधर मंडलाती हुई आगे बढ़ी और बत्तख आवाज़ करते-करते मधुमक्खी के पीछे भागती रही.

फिर मधुमक्खी नीचे को झुकी, कुछ देर हवा में ठहरी और फिर वो नदी की तरफ बढ़ी.



मिस्टर ओलव उस समय पेट्रा हरमन और उसकी बहन डोरमा के साथ टहल रहे थे। जब उन्होंने इस कारवां को अपनी तरफ आते हुए देखा तब उन्होंने पूछा, “आप लोग सब कहाँ जा रहे हैं?”

“हम लोग मधुमक्खी के पेड़ पर जा रहे हैं!” मिस्टर इन्नार ने साइकिल चलाते हुए कहा।

“क्या हम भी आपके साथ सकते हैं?” दोनों सुन्दर बहिनों ने पूछा।

“जल्दी! पर तुम्हें दौड़ना पड़ेगा,” मिस्टर इन्नार ने कहा।

“हम ज़रूर दौड़ेंगे!” उन तीनों ने कहा और वे भी पीछे-पीछे चले।

सब लोग सड़क पर मधुमक्खी के पीछे-पीछे दौड़े।







बर्था फिचवर्थ अभी एक अभियान से लौट रही थी. उसकी गाड़ी में कुछ खराबी आ गई थी इसलिए वो सड़क के पास रुकी थी. “अरे वाह!” उसने पूरी पलाटून को दौड़ते हुए देखकर कहा. “आप सभी लोग मधुमक्खी के पेड़ को खोजने के लिए दौड़ रहे होंगे?” वो चिल्लाई. “मधुमक्खी का पेड़ खोज पाना सरल काम नहीं है. उसे ढूँढना सच में एक साहसिक काम है!” फिर बर्था भी उनके पीछे-पीछे हो ली.

मधुमक्खी ने एक गोता लगाया और फिर वो आँखों से ओंझल हो गयी.

पर तभी दादाजी ने एक दूसरी मधुमक्खी को बोतल में से बाहर छोड़ा.
सब लोग अब नई मधुमक्खी का पीछा कर सकते थे.

वे सभी लोग शोर मचाते हुए भाग रहे थे. तभी उन्हें अपने सामने से
बकरियों का एक झुण्ड आता हुआ दिखाई दिया. जब भागते लोग बकरियों के
बीच से गुज़रे तो बकरियां मिमियाईं और इधर-उधर भागीं.

“यह क्या?” गंडेरिए ने कहा, “आप लोग मेरी बकरियों को डरा देंगे!”

“हम मधुमक्खी का पेड़ खोजने जा रहे हैं!” किसी ने कहा.

उसके बाद गंडेरिए ने अपनी बंसी बजाई और तुरंत बकरियों का झुण्ड भी
मधुमक्खी का पेड़ खोजने में लग गया. “आज तो बड़ा मज़ा आएगा!” गंडेरिए
ने दौड़ते हुए कहा.





तीन संगीतज्ञ सड़क पर दूसरे शहर जा रहे थे. उन्होंने इस पूरे कारवां को सामने से आते देखा. तमाम लोग, बच्चा-गाड़ी, बकरियां, साइकिल उनकी तरफ तेज़ी से दौड़े चले आ रहे थे!

“यह लोग क्यों दौड़ रहे हैं, पापा?” एक बच्चे ने अपने पिता से पूछा.

“हम लोग मधुमक्खी के पीछे दौड़ रहे हैं!” दादाजी ने उसे आसमान में ऊँगली से एक बिंदु की तरफ इशारा करते हुए कहा.

“वो हमें मधुमक्खी के पेड़ तक ले जाएगी,” मैरी एलेन उन संगीतज्ञों के सामने से दौड़ती हुई चिल्लाई.

“तुम भी हमारे साथ आओ!” बेर्था ने उन्हें साथ आने का निमंत्रण दिया.





फिर क्या था? पूरा कारवां तेज़ी से दौड़ता हुआ आगे बढ़ा!
बकरियों के पंजों से मक्का के पौधों के बीच एक पगडण्डी बन गई.
अब सबके दिल में एक ही उमंग थी - मधुमक्खी के पेड़ तक पहुँचने
की.

उन्होंने कई सड़कें और नाले पार किये. फिर वो एक छोटे जंगल में
से गुज़रे.





जंगल में से गुज़रते वक़्त मधुमक्खी बहुत तेज़ी से उड़ी और उनकी आँखों के सामने से न जाने कहाँ गायब हो गई. लोग भी दौड़ते-दौड़ते पस्त हो गए थे. वो वहाँ सांस लेने के लिए कुछ देर के लिए ठहरे.

दादाजी ने कांच की बोतल मैरी एलेन को थमा दी और उसने उसमें से आखरी मधुमक्खी को बाहर छोड़ा.

वो मधुमक्खी नीचे-नीचे उड़ी और सीधे जंगल में पेड़ों के एक झुरमुटे में गई.









“वो सीधे मधुमक्खी के पेड़ में गई होगी!” दादाजी ने हल्के से कहा.
“वहां शहद पाने के लिए हमें बहुत सारा धुआं पैदा करना पड़ेगा.”

उसके बाद सब लोगों ने गीली पत्तियां और टहनियां इकट्ठी कीं और धुआं पैदा किया.

कुछ देर में धुएं ने मधुमक्खियों को थोड़ा शांत किया. फिर दादाजी इन्नार की साइकिल पर खड़े हुए जिससे कि वो पेड़ तक पहुँच सकें. फिर उन्होंने मधुमक्खियों के छत्ते को तोड़ा और उसके छोटे-छोटे टुकड़े नीचे फेंके. बेबी सिल्वेस्टर की साफ़ चड़्डियों में छत्ते के टुकड़ों को लपेटा गया. संगीतज्ञों ने अपने वाद्ययंत्र बजाए और दोनों हरमन बहनें संगीत की धुनों पर नाचीं.

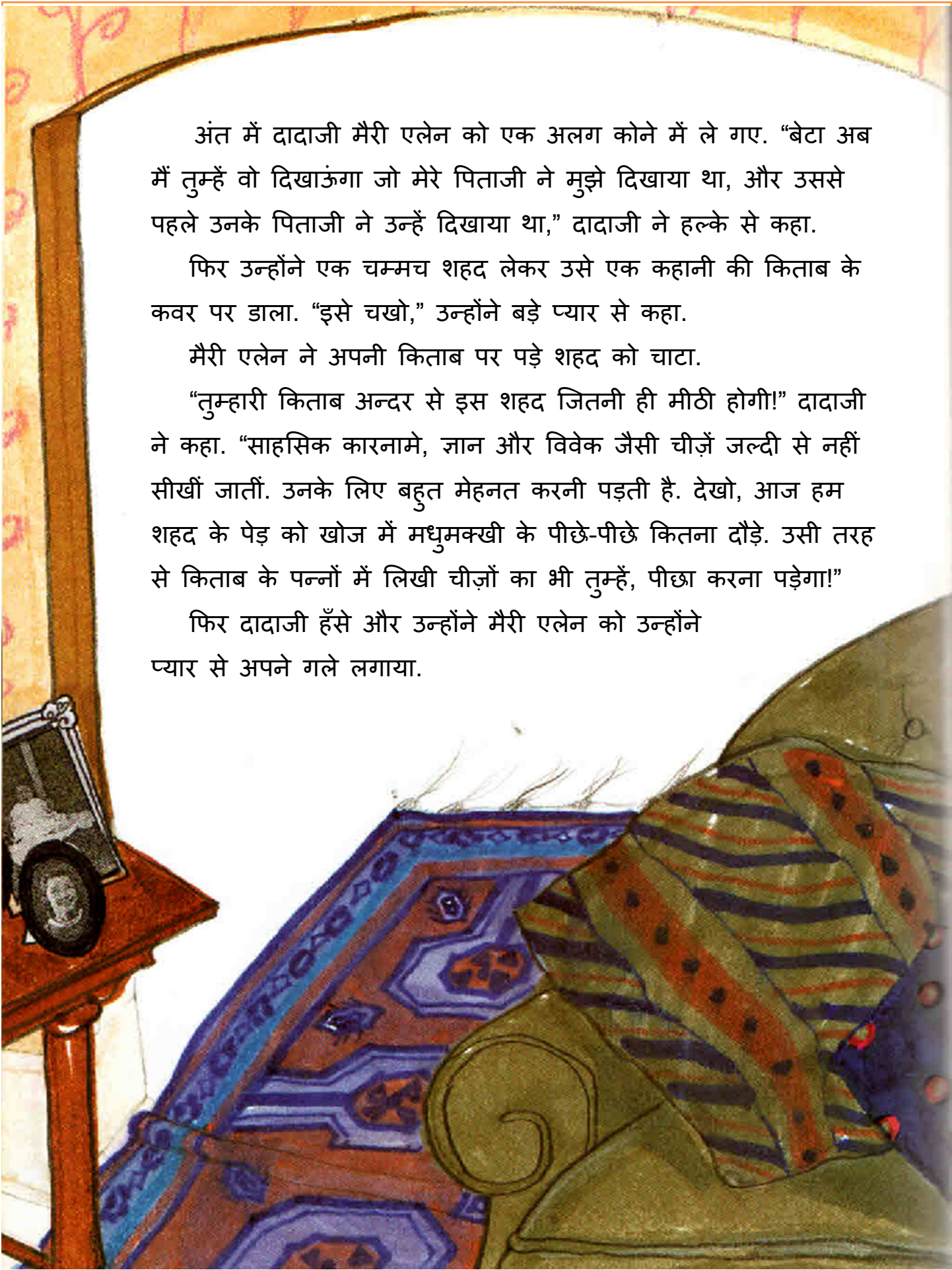




बाद में दादाजी ने सभी को घर में नाश्ते का न्योता दिया.
चाय और बिस्कुट के साथ-साथ खाने में ताज़ा शहद भी था!
सबके लिए वो दिन एक बेहद यादगार दिन रहा. लोग खूब दौड़े, मस्ती की,
हँसे और अंत में उन्होंने अपना मुंह मीठा किया.







अंत में दादाजी मैरी एलेन को एक अलग कोने में ले गए. “बेटा अब मैं तुम्हें वो दिखाऊंगा जो मेरे पिताजी ने मुझे दिखाया था, और उससे पहले उनके पिताजी ने उन्हें दिखाया था,” दादाजी ने हल्के से कहा.

फिर उन्होंने एक चम्मच शहद लेकर उसे एक कहानी की किताब के कवर पर डाला. “इसे चखो,” उन्होंने बड़े प्यार से कहा.

मैरी एलेन ने अपनी किताब पर पड़े शहद को चाटा.

“तुम्हारी किताब अन्दर से इस शहद जितनी ही मीठी होगी!” दादाजी ने कहा. “साहसिक कारनामे, ज्ञान और विवेक जैसी चीज़ें जल्दी से नहीं सीखीं जातीं. उनके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है. देखो, आज हम शहद के पेड़ को खोज में मधुमक्खी के पीछे-पीछे कितना दौड़े. उसी तरह से किताब के पन्नों में लिखी चीज़ों का भी तुम्हें, पीछा करना पड़ेगा!”

फिर दादाजी हँसे और उन्होंने मैरी एलेन को उन्होंने प्यार से अपने गले लगाया.





उस दिन के बाद से मैरी एलेन ने किताब पढ़ने को लेकर कभी शिकायत नहीं की. तब से किताबें पढ़ना उसे उतना ही रोचक लगा जितना मधुमक्खी के पेड़ को खोजना.